

दादा भगवान परुपित

चिंता



इस दुनिया में चिंता करना, वह बड़ी मूर्खता है।

चिंता

चिंता आती कहाँ से है ?

दादाश्री : कभी चिंता की है क्या?

प्रश्नकर्ता : चिंता तो मानव स्वभाव है, इसलिए किसी न किसी रूप में चिंता होती ही है।

दादाश्री : मनुष्य का स्वभाव कैसा है कि यदि उसे कोई थप्पड़ मारे, उसे सामने थप्पड़ मारता है। लेकिन यदि कोई समझदार हो, तो वह सोचेगा कि मुझे कानून हाथ में नहीं लेना चाहिए। कुछ लोग कानून हाथ में भी ले लेते हैं। यह गुनाह कहा जाएगा। चिंता कैसे कर सकता है मनुष्य? प्रत्येक भगवान ऐसा कह गए हैं कि किसी भी प्रकार की चिंता मत करना। सारी जिम्मेदारी हमारे सिर पर रखना।

प्रश्नकर्ता : परंतु कहना और व्यवहार में लाना, दोनों के बीच भारी अंतर है।

दादाश्री : नहीं, मैं व्यवहार में छोड़ने को नहीं कहता। यह तो उसके बारे में बता रहा हूँ। ऐसे कुछ चिंता छूटती नहीं, परंतु यह चिंता नहीं करनी है, फिर भी हो जाती है सभी को।

अब, जब यह चिंता होती है, तब दवाई क्या लगाते हो? चिंता की दवाई नहीं मिलती?

जहाँ चिंता, वहाँ अनुभूति कहाँ से?

प्रश्नकर्ता : चिंता से परे होने के लिए भगवान से आशीर्वाद माँगो कि इसमें से मैं कब छूटूँ इसके लिए 'भगवान, भगवान' करो, इस माध्यम से हम आगे बढ़ना चाहते हैं। फिर भी मुझे अपने अंदरवाले भगवान की अनुभूति नहीं होती।

दादाश्री : कैसे होगी अनुभूति? चिंता में अनुभूति नहीं होती! चिंता और अनुभूति दोनों साथ में नहीं होते। चिंता बंद होने पर अनुभूति होगी।

प्रश्नकर्ता : चिंता किस तरह मिटे?

दादाश्री : यहाँ सत्संग में रहने पर। सत्संग में आए हो कभी?

प्रश्नकर्ता : ओर जगह सत्संग में जाता हूँ।

दादाश्री : जिस सत्संग में जाने से यदि चिंता बंद नहीं होती हो तो वह सत्संग छोड़ देना चाहिए। बाकी, सत्संग में जाने से चिंता बंद होनी ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जितनी देर वहाँ बैठते हैं, उतनी देर शांति रहती है।

दादाश्री : नहीं, उसे शांति नहीं कहते। उसमें शांति नहीं है। ऐसी शांति तो गर्भे सुनें तो भी हो जाती है। सच्ची शांति तो हमेशा के लिए रहनी चाहिए, जानी ही नहीं चाहिए। अर्थात् जहाँ चिंता हो उस सत्संग में जाना ही किसलिए? सत्संगवालों से कह देना कि, 'भैया, हमें चिंता होती है, इसलिए अब हम यहाँ आनेवाले नहीं हैं, वर्ना आप कुछ ऐसा इलाज करो कि चिंता नहीं हो।'

प्रश्नकर्ता : ऑफिस जाऊँ, घर जाऊँ, तो भी कहीं मन नहीं लगता।

दादाश्री : ऑफिस तो हम नौकरी के लिए जाते हैं और तनख्वाह तो चाहिए न? घर-गृहस्थी चलानी है, यानी कि घर छोड़ नहीं देना है, नौकरी भी नहीं छोड़नी है। लेकिन जहाँ पर चिंता नहीं मिटती, सिर्फ वह

सत्संग छोड़ देना है। नया दूसरा सत्संग खोजना, तीसरे सत्संग में जाना। सत्संग कई तरह के होते हैं, परंतु सत्संग से चिंता जानी चाहिए। आप अन्य किसी सत्संग में नहीं गए?

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें ऐसा बताया गया है कि भगवान आपके अंदर ही हैं। शांति आपको अंदर से ही मिलेगी, बाहर भटकना बंद कर दो।

दादाश्री : हाँ, ठीक है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अंदर जो भगवान बैठे हैं, उनका ज़रा-सा भी अनुभव नहीं होता।

दादाश्री : चिंता में अनुभव नहीं होता। चिंता होने पर, जो अनुभव हुआ होगा, वह भी चला जाएगा। चिंता तो एक प्रकार का अहंकार कहलाता है। भगवान कहते हैं कि, 'तू अहंकार करता है, तो चला जा हमारे पास से।' जिसे 'यह मैं चलाता हूँ' ऐसा चलाने का अहंकार हो, वही चिंता करता है न! जिसे भगवान पर ज़रा भी विश्वास नहीं हो, वही चिंता करता है।

प्रश्नकर्ता : भगवान पर विश्वास तो है।

दादाश्री : विश्वास हो तो ऐसा करेगा ही नहीं। भगवान भरोसे छोड़कर, चैन से सो जाएगा। फिर चिंता भला कौन करे? इसलिए भगवान पर भरोसा रखो। भगवान आपका थोड़ा बहुत सँभालता होगा या नहीं? खाना खाकर फिर चिंता करते हो? पाचक रस पड़े या नहीं, पित्त पड़ा, ऐसी सारी चिंताएँ नहीं करते? इसका खून बनेगा या नहीं, इसकी संडास होगी या नहीं, ऐसी चिंता करते हो? अर्थात् यह अंदर का बहुत कुछ चलाने का है, बाहर तो क्या चलाना है कि चिंता करते हो? फिर भगवान को बुरा ही लगेगा न! अहंकार करोगे तो चिंता होगी। चिंता करनेवाला मनुष्य अहंकारी कहलाता है। एक सप्ताह भगवान को सौंपकर चिंता करना छोड़ दो। फिर यहाँ किसी दिन भगवान का साक्षात्कार करा देंगे, जिससे हमेशा के लिए चिंता मिट जाएगी।

चिंता यानी प्रकट अग्नि

अतः यह सब समझना होगा। यूँ ही चुपड़ने की दवाई पी जाएँ तो क्या होगा फिर? ये सभी चुपड़ने की दवाई पी गए हैं, वर्ना मनुष्य को चिंता तो होती होगी? हिन्दुस्तान के मनुष्य को चिंता होती होगी कहीं? आपको चिंता करने का शौक है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, शांति चाहते हैं।

दादाश्री : चिंता तो अग्नि कहलाती है। ऐसा होगा और वैसा होगा। किसी काल में जब कभी संस्कारी मनुष्य होने का सद्भाग्य प्राप्त हो और चिंता में रहे, तो मनुष्यपन भी चला जाएगा। कितना भारी जोखिम है? अगर आपको शांति चाहिए तो मैं आपकी चिंता हमेशा के लिए बंद कर दूँ।

जब से चिंता बंद हो, तभी से वीतराग भगवान का मोक्ष मार्ग कहलाता है। वीतराग भगवान के जब दर्शन करे, तभी से ही चिंता बंद हो जानी चाहिए। परंतु दर्शन करना भी नहीं आता। दर्शन करना तो ज्ञानीपुरुष सिखलाते हैं कि इस तरह दर्शन करना, तब काम होगा। इस चिंता में तो आग सुलगती रहती है। शकरकंद देखे हैं? शकरकंद भट्टी में रखें और भुनें, उसके जैसा होता है।

ज्ञानी कृपा से चिंता मुक्ति

प्रश्नकर्ता : तो चिंता से मुक्त होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : आपकी तरह ये भाई भी बहुत जगह गए, मगर फायदा नहीं हुआ। तब उन्होंने क्या किया, यह उनसे पूछकर देखो। उन्हें एक भी चिंता है? अभी गालियाँ दें फिर भी अशांति होगी क्या? उनसे पूछो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चिंता बंद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : वह तो 'ज्ञानीपुरुष' के पास आकर कृपा ले जाना। फिर चिंता बंद हो जाएगी और संसार चलता रहेगा।

चिंता जाए तब से समाधि

चिंता नहीं हो तो सच में उलझन गई। चिंता नहीं हो, वरीज नहीं हों और उपाधि में समाधि रहे तो समझना कि सच में उलझन गई।

प्रश्नकर्ता : ऐसी समाधि लानी हो तो भी नहीं आती।

दादाश्री : वह तो यों लाने से नहीं आती। ज्ञानीपुरुष उलझन सुलझा दें, पूर्ण शुद्ध कर दें, तब निरंतर समाधि रहेगी।

यदि चिंता नहीं हो ऐसी लाइफ हो, तो अच्छी कहलाएगी न?

प्रश्नकर्ता : वह तो अच्छी ही कहलाएगी न!

दादाश्री : हम बगैर चिंता की लाइफ बना देंगे। फिर आपको चिंता नहीं रहेगी। इस काल का यह एक महान आश्चर्य है। इस काल में ऐसा नहीं होता, मगर देखिए यह हुआ है न!

‘खुद’ परमात्मा, फिर चिंता क्यों ?

सिर्फ बात ही समझनी है। आप भी परमात्मा हो, भगवान ही हो, फिर किसलिए वरीज करनी? चिंता किसलिए करते हो? एक क्षण भर के लिए भी चिंता करने जैसा यह संसार नहीं है। अब चिंता से वह सेफ साइड नहीं रह सकती, क्योंकि जो सेफ साइड नेचुरल थी, उसमें आपने उलझन पैदा की। फिर अब चिंता क्यों करते हो? उलझन आए तो उसका सामना करो और सुलझा दो।

प्रश्नकर्ता : यदि हम प्रतिकूलता का सामना करें, उसका अवरोध करें, प्रतिकार करें, तो उससे अहंकार बढ़ेगा।

दादाश्री : चिंता करने के बजाय सामना करना अच्छा। चिंता के अहंकार की तुलना में सामना करने का अहंकार छोटा है। भगवान ने कहा है कि, ‘ऐसी परिस्थिति में सामना करना, उपाय करना, लेकिन चिंता मत करना।’

चिंता करनेवाले को दो दंड

भगवान कहते हैं कि चिंता करनेवाले को दो दंड हैं और चिंता नहीं करनेवाले को एक ही दंड है। अठारह साल का इकलौता लड़का मर जाए, उसके पीछे जितनी चिंता करता है, जितना दुःख मनाता है, सिर फोड़ता है, और जो कुछ भी करता है, उसे दो दंड हैं। और यदि यह सब नहीं करे तो एक ही दंड है। लड़का मर गया उतना ही दंड है और सिर फोड़ा वह अतिरिक्त दंड है। हम उस दोहरे दंड में कभी भी नहीं पड़ते। इसलिए हम ने इन लोगों से कहा है कि पाँच हजार की जेब कट जाए तब 'व्यवस्थित' (अर्थात् साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स) है, कहकर आगे चल पड़ना और आराम से घर जाना।

यह एक दंड हमारा खुद का ही हिसाब है, इसलिए घबराने का कोई कारण नहीं है। इसलिए हो गया है, उसे तो 'हुआ सो करेक्ट' ऐसा कहो!

जिसकी चिंता वह कार्य बिगड़े

कुदरत क्या कहती है कि कार्य नहीं हो रहा हो तो प्रयत्न करो, ज़बरदस्त प्रयत्न करो मगर चिंता मत करो। क्योंकि चिंता करने से उस कार्य को धक्का पहुँचता है और चिंता करनेवाला खुद लगाम अपने हाथों में लेता है। 'मानो मैं ही चला रहा हूँ।' ऐसे लगाम अपने हाथों में लेता है। उसका गुनाह लागू होता है।

परसत्ता के उपयोग से चिंता होती है। विदेश की कमाई विदेश में ही रहेगी। ये मोटर-बंगले, मिलें, बीवी-बच्चे सभी यही छोड़कर जाना पड़ेगा। उस आखरी स्टेशन पर तो किसी के भी बाप का चलनेवाला नहीं हैं! सिर्फ पुण्य और पाप साथ ले जाने देंगे। दूसरी सादी भाषा में कहूँ तो यहाँ जो-जो गुनाह किए उसकी धाराएँ साथ आएँगी। गुनाह की कमाई यहीं रहेगी और फिर मुकदमा चलेगा। तब धाराओं के अनुसार नया शरीर प्राप्त करके, नये सिरे से कमाई करके कर्ज चुकाना पड़ेगा। इसलिए भाई! पहले

से ही सीधा हो जा न! स्वदेश (आत्मा) में तो बहुत ही सुख है, परंतु स्वदेश देखा ही नहीं है न!

उगाही याद आए वहाँ...

रात को सभी कहें कि, 'ग्यारह बज गए हैं, आप अब सो जाओ।' जाड़े का दिन है और आप मच्छरदानी में घुस गए। घर के सभी लोग सो गए हैं। मच्छरदानी में, घुसने के बाद आपको याद आया कि, 'एक आदमी का तीन हजार का बिल बाकी है और मुद्दत पूरी हो गई है। आज दस्तखत करवाए होते तो मुद्दत मिल जाती। रातों-रात कहीं दस्तखत होते होंगे? होंगे नहीं न? तो चैन से सो जाओगे, तो आपका क्या बिगड़ेगा?

चिंता का रूट-कॉज़

जी जलता रहे, ऐसी चिंता तो काम की ही नहीं। जो शरीर को नुकसान करती है और हमारे पास जो वस्तु आनेवाली थी, उसमें विघ्न डालती है। चिंता से ही ऐसे संयोग पैदा हो जाते हैं। सार-असार के अथवा ऐसे विचार करने चाहिए, मगर चिंता किसलिए? इसे इगोइज़म (अहंकार) कहा है। वैसा इगोइज़म नहीं होना चाहिए। 'मैं कुछ हूँ और मैं ही चला रहा हूँ', इससे उसे चिंता होती है और 'मैं होऊँगा तभी इस केस का समाधान होगा', उसीसे चिंता होती रहती है। इसलिए इगोइज़म वाले भाग का ऑपरेशन कर देना, फिर जो सारासार के विचार रहें, उसमें हर्ज नहीं है। वह फिर भीतर खून नहीं जलाते। वर्ना चिंता तो खून जलाती है, मन जलाती है। चिंता होती हो, उस समय बच्चा कुछ कहने आए, तो उस पर भी उग्र हो जाता है अर्थात् हर तरह से नुकसान करती है। यह अहंकार ऐसी चीज़ है कि पैसे हों या नहीं हों, लेकिन कोई कहेगा कि, 'इस चंदूभाई ने मेरा सब बिगाड़ दिया', तब अपार चिंता और अपार उपाधि हो जाती है। और संसार तो, हमने नहीं बिगाड़ा हो फिर भी कहता है न!

चिंता के परिणाम क्या ?

इस संसार में बाइ प्रोडक्ट का अहंकार होता ही है और वह सहज अहंकार है। जिससे संसार आसानी से चले ऐसा है। वहाँ अहंकार का पूरा कारखाना ही खड़ा कर दिया और अहंकार का विस्तार किया और इतना विस्तार किया कि जिससे चिंता की हद नहीं रही। अहंकार का ही विस्तार किया। सहज अहंकार से, नोर्मल अहंकार से संसार चले ऐसा है। लेकिन वहाँ अहंकार का विस्तार करके फिर चाचा इतनी उम्र में कहते हैं न कि, 'मुझे चिंता होती है।' उस चिंता का परिणाम क्या? आगे जानवर गति मिलेगी। इसलिए सावधान हो जाओ। अभी सावधान होने जैसा है। मनुष्य में हो तब तक सावधान हो जाओ, वरना जहाँ चिंता होगी वहाँ तो फिर जानवर का फल मिलेगा।

भक्त तो भगवान से भी झगड़े

भगवान के सच्चे भक्त को तो यदि चिंता हो, तो वह भगवान से भी झगड़े। 'हे भगवान! आप मना करते हैं तो फिर मुझे चिंता क्यों होती है?' जो भगवान से लड़ता नहीं वह सच्चा भक्त नहीं। यदि कोई उपाधि आए, तो आपके भीतर भगवान बैठा है, उसे डाँटना-धमकाना। जो भगवान से भी झगड़े, वह सच्चा प्रेम कहलाता है। आज तो भगवान का सच्चा भक्त मिलना भी मुश्किल है। सब अपने-अपने मतलब से घूम रहे हैं।

श्री कृष्ण भगवान कहते हैं,

'जीव तु सीद ने सोचना करे, कृष्ण ने करवु होय ते करे।'

तब ये लोग क्या कहते हैं? कृष्ण भगवान तो कहते हैं, लेकिन यह संसार चलाना है तो चिंता किए बगैर थोड़े ही चलेगा? इसलिए लोगों ने चिंता के कारखाने खोले हैं! वह माल भी नहीं बिकता। कहाँ से बिके? जहाँ बेचने गए, वहाँ भी उसका कारखाना तो होता ही है न! इस संसार में एक भी मनुष्य ऐसा ढूँढ लाओ कि जिसे चिंता नहीं होती हो।

एक ओर कहते हैं कि 'श्री कृष्णः शरणं मम्' और यदि श्री कृष्ण की शरण ली है तो फिर चिंता काहे की? महावीर भगवान ने भी चिंता करने को मना किया है। उन्होंने तो एक चिंता का फल तिर्यच गति कहा है। चिंता तो सबसे बड़ा अहंकार है। 'मैं ही यह सब चलाता हूँ' ऐसा ज़बरदस्त रहा करता है न, उसके फल स्वरूप चिंता पैदा होती है।

मिली एक ही बात हर ओर से।

चिंता तो आर्तध्यान है। यह शरीर जितना शाता-अशाता का उदय लेकर आया है, उतना भुगतने पर ही छुटकारा है। इसलिए किसीका दोष मत देखना, किसी के दोष के प्रति दृष्टि मत करना और निज दोष से ही बंधन है ऐसा समझ जाओ। तुझ से कुछ बदलाव होनेवाला नहीं है।

इस पर श्रीकृष्ण भगवान ने कहा कि, 'जीव तू काहे सोच करे, कृष्ण को करना हो सो करे।' तब जैन क्या कहते हैं कि, 'यह तो कृष्ण भगवान ने कहा है, महावीर भगवान ने ऐसा नहीं कहा।' महावीर भगवान ने इस पर क्या कहा कि 'राई मात्र घट-बढ़ नहीं, देखा केवळज्ञान, यह निश्चय कर जानिए, तजिए आर्तध्यान।' चिंता और आर्तध्यान छोड़ दो। लेकिन भगवान का कहा माना हो तब न? नहीं मानना हो, उसे हम कैसे डाँट सकते हैं? मुझे ऐसा कहा था, तब मैं तो मान गया था। मैंने कहा, हाँ भाई, मगर यह एक ही ऐसी बात है, इसलिए मैंने दूसरी ओर तलाश की। जो महावीर भगवान ने कहा, वही कृष्ण भगवान ने कहा, तब मैंने कहा, यह ताल मिल रहा है, फिर भी शायद किसीकी भूल हो रही हो, तो आगे जाँच करो।

तब सहजानंद स्वामी कहते हैं, 'तमारी वगर एक तरणुंय नहीं टूटे?' ओहो! आप भी पक्के हैं! यह 'आपके बगैर एक तिनका भी नहीं टूटेगा?' तब कहा, 'चलिए तीन ताल मिले।' तब मैंने कहा, और ताल मिलाओ।

अब कबीर साहब क्या कहते हैं, 'प्रारब्ध पहले बना, पीछे बना

शरीर, कबीर अचंभा ये है, मन नहीं बाँधे धीर।' मन को धीरज नहीं रहती यही बड़ा आश्चर्य है। ये सभी ताल मिलता रहा, सबसे पूछता रहा। आपका क्या कहना है? बोलिए, कह दीजिए।

हाँ, एक व्यक्ति की भूल हो सकती है, मगर वीतरागों का गलत तो कह ही नहीं सकते। लिखनेवाले की भूल हो गई हो तो ऐसा हो सकता है। वीतराग की भूल तो मैं कभी मानूँगा ही नहीं। मुझे कितना भी घुमाया-फिराया जाए परंतु वीतरागों की भूल मैंने मानी ही नहीं। बचपन से, जन्म से, वैष्णव होने के बावजूद भी मैंने उनकी भूल नहीं मानी। क्योंकि इतने सयानी पुरुष! जिनका नाम स्तवन करने से कल्याण हो जाए!! और देखो, हमारी दशा देखो! राई मात्र कम-ज्यादा नहीं। अरे! एक राई का दाना देखा है आपने? तब कहें, लो! नहीं देखा होगा राई का दाना? एक राई के दाने के जितना फ़र्क होनेवाला नहीं है और देखो, लोग कमर कसकर, जब तक जाग सकें, तब तक जागते रहते हैं। शरीर को खींच-खींचकर जागते हैं और फिर तो हार्ट फ़ेल की तैयारी करते हैं!

इनके लिए, क्रीमत किसकी ?

एक बूढ़े चाचा आए और मेरे पैरों में पड़कर बहुत रोए। मैंने पूछा, 'क्या दुःख है आपको?' तो बताया, 'मेरे गहने चोरी हो गए, मिल ही नहीं रहे। अब वापस कब मिलेंगे?' तब मैंने उनसे कहा, 'वे गहने क्या साथ ले जानेवाले थे?' तब बोले, 'नहीं, साथ नहीं ले जा सकते। लेकिन मेरे गहने जो चोरी हो गए हैं, वे वापस कब मिलेंगे?' मैंने कहा, 'आपके जाने के बाद आएँगे।' गहने गए उसके लिए इतनी हाय, हाय, हाय! अरे, जो गया उसकी चिंता करनी ही नहीं चाहिए। शायद आगे की चिंता, भविष्य की चिंता करें, वह हम समझते हैं कि बुद्धिमान मनुष्य को चिंता तो होती ही है, लेकिन गया उसकी भी चिंता? हमारे देश में ऐसी चिंता होती है। क्षणभर पहले जो हो चुका, उसकी चिंता क्या ? जिसका उपाय नहीं, उसकी चिंता क्या? कोई भी बुद्धिमान समझता है कि अब कोई उपाय नहीं रहा, इसलिए उसकी चिंता छोड़ देनी चाहिए।

वे चाचा रो रहे थे, मगर मैंने उन्हें दो मिनट में ही पलट दिया । फिर तो 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने लगे । वे आज सवेरे भी वहाँ रणछोड़जी के मंदिर में मिले, तब भी बोल उठे, 'दादा भगवान?' मैंने कहा, 'हाँ, वही ।' फिर बोले, 'सारी रात मैं तो आपका ही नाम लेता रहा!' इन्हें तो इधर घुमाओ तो इधर, इन्हें ऐसा कुछ भी नहीं है ।

प्रश्नकर्ता : आपने उनसे क्या कहा?

दादाश्री : मैंने कहा, 'वे गहने वापस आएँ ऐसा नहीं है, हाँ, लेकिन दूसरी तरह से गहने आएँगे।'

प्रश्नकर्ता : आप मिल गए अर्थात् बड़ा गहना ही मिल गया न!

दादाश्री : हाँ, यह तो आश्चर्य है! लेकिन यह उसे किस तरह समझ आए? उसे तो उन गहनों के सामने इसकी क्रीमत ही नहीं होगी न! अरे, उसे चाय पीनी हो और हम कहें कि, 'मैं हूँ न, तुझे चाय का क्या काम है?' तब वह कहेगा, 'मुझे बिना चाय चैन नहीं आता, आप हों या न हों।' इनके लिए क्रीमत किसकी? जिसकी इच्छा है उसकी!

कुदरत के गेस्ट के ठाठ तो देखो !

इस वर्ल्ड में कोई भी चीज़ जो सबसे क्रीमती होती है, वह फ्री ऑफ कोस्ट ही होती है। उस पर कोई भी सरकारी कर नहीं लगा सकते। कौन-सी चीज़ क्रीमती है?

प्रश्नकर्ता : हवा, पानी ।

दादाश्री : हवा ही, पानी नहीं। हवा पर सरकारी कर बिल्कुल नहीं है, कुछ नहीं। जहाँ देखो वहाँ, आप जहाँ जाओ, एनी व्हेर, एनी प्लेस, वहाँ आपको वह प्राप्त होगी। कुदरत ने कितना रक्षण किया है आपका। आप कुदरत के गेस्ट हो और गेस्ट होकर आप शोर मचाते हो, चिंता करते हो। इसलिए कुदरत को मन में ऐसा लगता है कि अरे, मेरे गेस्ट बने हैं, लेकिन इस आदमी को गेस्ट बनना भी नहीं आता। तब फिर रसोईघर में

जाकर कहेगा, 'कढ़ी में नमक ज़रा ज़्यादा डालना।' अरे, गेस्ट होकर रसोईघर में घुसता है। वे जैसा परोसें वैसा खा ले। गेस्ट होकर रसोईघर जाया जाता होगा आपसे? अर्थात् यह बेशक्रीमती हवा फ्री ऑफ कॉस्ट। उससे सेकन्ड नंबर पर क्या आता है? पानी आता है। पानी थोड़े बहुत पैसों से मिलता है। और फिर तीसरा अनाज आता है, वह भी थोड़े बहुत पैसों में।

प्रश्नकर्ता : प्रकाश।

दादाश्री : लाइट तो होती ही है न। लाईट तो, सूर्यनारायण आपकी सेवा में ही बैठे रहते हैं, ऐसे साढ़े छः बजे आकर खड़े हो जाते हैं।

कहीं भी भरोसा ही नहीं

यह तो हमारे हिन्दुस्तान के लोग तो इतने चिंतावाले हैं कि ये सूर्यनारायण यदि एक ही दिन की छुट्टी लें और कहें कि, 'अब फिर कभी छुट्टी लूँगा नहीं।' तो दूसरे दिन इन लोग को शंका होगी कि कल सूर्यनारायण आएँगे या नहीं आएँगे? सुबह होगी या नहीं होगी? अर्थात् नेचर पर भी भरोसा नहीं है। खुद अपने पर भी भरोसा नहीं है, भगवान पर भी भरोसा नहीं है। किसी चीज़ पर भरोसा नहीं है। खुद की वाइफ पर भी भरोसा नहीं है!

खुद ही निमंत्रित की हुई चिंता।

चिंता करता है, वह भी पड़ोसी का देखकर। पड़ोसी के घर गाड़ी है और हमारे घर पर नहीं। अरे, जीवन यापन के लिए कितना चाहिए? तू एक बार तय कर ले कि इतनी-इतनी मेरी ज़रूरतें हैं। जैसे कि घर में खाने-पीने को पर्याप्त चाहिए, रहने को मकान चाहिए, घर चलाने लायक लक्ष्मी चाहिए। तो इतना तुझे मिल ही जाएगा। लेकिन यदि पड़ोसी के दस हजार बैंक में पड़े हों, तो तुझे मन में खटकता रहता है। इससे तो दुःख पैदा होते हैं। दुःख को खुद ही निमंत्रण देता है।

जीने का आधार, अहंकार

व्याकुल तो, जब पैसे बहुत आएँ न, तभी व्याकुल रहता है, चिंतित रहता है। इन अहमदाबाद के मिलवाले सेठों की बात कहूँ तो आपको लगेगा कि हे भगवान! ऐसी दशा एक दिन के लिए भी मत देना। सारा दिन शकरकंद भट्टी में रखा हो, उस तरह भुनता रहता है। मात्र, किस आधार पर जीते हैं? मैंने एक सेठजी से पूछा, 'किस आधार पर आप जीते हैं?' तब बोले, 'यह तो मुझे भी नहीं पता चलता।' तब मैंने कहा, 'बता दूँ? सबसे बड़ा तो मैं ही हूँ न! बस इस आधार पर जी रहे हैं।' बाकी कुछ भी सुख नहीं मिलता।

न करो अप्राप्त की चिंता

अहमदाबाद के कुछ सेठ मिले थे। वे भोजन के समय मिल में चले जाते हैं। मेरे साथ भोजन लेने बैठे थे। तब सेठानी सामने आकर बैठीं। मैंने पूछा, 'सेठानीजी, आप क्यों सामने आकर बैठ गई?' तो बोलीं, 'सेठजी ठीक से भोजन नहीं करते हैं, कभी भी।' इससे मैं समझ गया। जब मैंने सेठजी से पूछा तो बोले, 'मेरा चित्त पूरा वहाँ चला जाता है।' मैंने कहा, 'ऐसा मत करना। वर्तमान में थाली आई, उसे पहले, अर्थात् प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो। जो प्राप्त वर्तमान है उसे भोगो।

चिंता होती हो तो फिर भोजन लेने रसोईघर में जाना पड़ता है? फिर बेडरूम में सोने जाना पड़ता है? और ऑफिस में काम पर?

प्रश्नकर्ता : वो भी जाते हैं।

दादाश्री : वे सारे डिपार्टमेन्ट हैं। तो इस एक ही डिपार्टमेन्ट की परेशानी दूसरे डिपार्टमेन्ट में मत ले जाना। एक डिविज़न में जाओ तब वहाँ का, उतना ही संपूर्ण काम कर लेना। लेकिन दूसरे डिविज़न में भोजन करने गए, तो पहले डिविज़न की परेशानी वहीं छोड़कर, वहाँ भोजन करने बैठे तो टेस्ट से खाना। बेडरूम में जाने पर भी पहलेवाली परेशानी वहीं

की वहीं रखना। जिसकी ऐसी सेंटिंग नहीं है, वह मनुष्य मारा जाएगा। खाना खाने बैठा हो, तब चिंता करे कि ऑफिस में साहब डाँटेंगे तब क्या करूँगा? अरे, डाँटेंगे तब देख लेंगे! अभी आराम से खा न!

भगवान ने क्या कहा था कि, 'प्राप्त को भोगो, अप्राप्त की चिंता मत करो।' अर्थात् क्या कि, 'जो प्राप्त है उसे भोगो!'

एयरकंडिशन में भी चिंता

प्रश्नकर्ता : और भी चिंताएँ होती हैं न दिमाग में।

दादाश्री : खाना खाते हो तो भी साथ में चिंता होती है। अर्थात् वह घंटा लटका ही रहता है ऊपर, 'तो कब गिर जाए, तो कब गिर जाए, तो कब गिर जाए!!' अब बोलो! ऐसे भय के संग्रहस्थान के नीचे यह सभी भोगना! यानी यह सब कैसे पुसाएगा? फिर भी लोग निर्लज्ज होकर भोगते भी हैं। जो होना होगा, वह होगा, मगर भोगो। इस संसार में भोगने योग्य है कुछ?

विदेश में ऐसा सब नहीं होता। किसी देश में ऐसा नहीं होता। यह सब तो यहीं पर है। बुद्धि का भंडार, थोक में बुद्धि, चिंता भी थोक में, कारखाने खोलते हैं सभी। ये बड़े-बड़े कारखाने, ज़बरदस्त पंखे घूमते हैं फिर, सभी कुछ घूमता है। चिंता भी करते हैं और उपाय भी करते हैं। फिर वह ठंडा करते हैं, क्या कहते हैं उसे?

प्रश्नकर्ता : एयरकंडीशन।

दादाश्री : हाँ, एयरकंडीशन। हिन्दुस्तान में आश्चर्य ही है न!

प्रश्नकर्ता : अभी सभी चिंताएँ एयरकंडीशन में ही होती हैं।

दादाश्री : हाँ, अर्थात् वे साथ में ही होती हैं। इन चिंताओं के साथ एयरकंडीशन। हम सब को एयरकंडीशन की ज़रूरत नहीं पड़ती।

ये अमेरिकनों की लड़कियाँ सब चली जाती हैं। उसकी उन्हें बहुत

चिंता नहीं होती और यहाँ पर लोगों को? क्योंकि हर एक की मान्यता अलग है।

आयुष्य का एक्सटेन्शन मिला?

आप इस दुनिया में अभी दो सौ एक साल तो रहोगे न? एक्सटेन्शन नहीं लिया?

प्रश्नकर्ता : एक्सटेन्शन मिलेगा किस तरह? अपने हाथ में तो कुछ भी नहीं, मुझे तो नहीं लगता।

दादाश्री : क्या बात करते हो?! यदि जीना हाथ में हो तो मरेगा नहीं। यदि आयुष्य का एक्सटेन्शन नहीं मिलता तो किसलिए चिंता करता है? जो मिला है, उसे ही आराम से भोग न।

मनुष्य स्वभाव चिंता मोल ले

चिंता से तो काम बिगड़ता है। जो चिंता है वह काम को सौ प्रतिशत के बजाय सत्तर प्रतिशत कर देती है। चिंता काम को ऑब्स्ट्रक्ट (विघ्न डालना) करती है। यदि चिंता नहीं हो, तो बहुत सुंदर परिणाम आएगा।

जैसे कि 'हम मरनेवाले हैं', ऐसा जानते सभी हैं। लेकिन जब मृत्यु याद आती है तब क्या करते हैं लोग? याद आए, तब क्या करते हैं? उसे धक्का मार देते हैं। हमें कुछ हो जाएगा तो, ऐसा याद आते ही धक्का मार देते हैं। उसी प्रकार जब अंदर चिंता होने लगे, तब धक्का मार देना कि यहाँ नहीं भाई!

चिंता से हमेशा सब बिगड़ता है। चिंता मे यदि मोटर चलाओगे तो टकरा जाएगी। चिंता से व्यापार करे, वहाँ काम उलट देता है। चिंता से यह सब बिगड़ा है संसार में।

चिंता करने जैसा संसार है ही नहीं। इस संसार में चिंता करना, वह बेस्ट फूलिश्नेस है। संसार चिंता करने के लिए है ही नहीं। यह इट सेल्फ

क्रिएशन है। भगवान ने यह क्रिएशन नहीं किया है। इसलिए चिंता करने के लिए यह क्रिएशन नहीं है। ये मनुष्य सिर्फ चिंता ही करते हैं, अन्य कोई जीव चिंता नहीं करते। अन्य चौर्यासी लाख योनियाँ हैं, लेकिन कोई चिंता-वरीज नहीं करता। ये मनुष्य नामक जीव ज़रूरत से ज्यादा अक्लवाले हैं, वे ही सारा दिन चिंता में जलते रहते हैं।

चिंता तो प्योर इगोइज़म हैं। ये जानवर कोई चिंता नहीं करते और इन मनुष्यों को चिंता? ओ हो हो! अनंत जानवर हैं, किसीको चिंता नहीं है और ये मनुष्य अकेले ही जड़ जैसे है कि सारा दिन चिंता में जलते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : जानवर से भी गए-गुजरे हैं न ये?

दादाश्री : जानवर तो बहुत अच्छे हैं। जानवर को भगवान ने आश्रित कहा है। इस संसार में यदि कोई निराश्रित है, तो सिर्फ ये मनुष्य ही हैं और उनमें भी हिन्दुस्तान के मनुष्य ही शत प्रतिशत निराश्रित हैं, फिर इन्हें दुःख ही होगा न! कि जिन्हें किसी प्रकार का आसरा ही नहीं है!

मज़दूर चिंता नहीं करते और सेठ लोग चिंता करते हैं। मज़दूर एक भी चिंता नहीं करते, क्योंकि मज़दूर उच्च गति में जानेवाले हैं और सेठ लोग नीची गति में जानेवाले हैं। चिंता से नीची गति होती है, इसलिए चिंता नहीं होनी चाहिए।

निरी वरीज, वरीज, वरीज। शकरकंद भठी में भुनें, ऐसे जगत् भुन रहा है। मछलियाँ तेल में तली जाएँ ऐसी तड़फड़ाहट, तड़फड़ाहट हो रही है। इसे लाइफ कैसे कहेंगे?

‘मैं करता हूँ’, इसलिए चिंता

प्रश्नकर्ता : ‘चिंता नहीं होनी’ उसका भान होना, वह चिंता का दूसरा रूप नहीं है?

दादाश्री : नहीं। चिंता तो इगोइज़म है सिर्फ, इगोइज़म। अपने

स्वरूप से अलग होकर वह इगोइज़म करता है कि, 'मैं ही चलानेवाला हूँ।' संडास जाने की शक्ति नहीं है और 'मैं चलाता हूँ' ऐसे कहता है।

चिंता वही अहंकार। इस बच्चे को चिंता क्यों नहीं होती? क्योंकि वह जानता है कि मैं नहीं चलाता। कौन चलाता है, उसकी उसे पड़ी ही नहीं है।

'मैं करता हूँ, मैं करता हूँ' ऐसे करता रहता है, इसलिए चिंता होती है।

चिंता ही सबसे बड़ा अहंकार

प्रश्नकर्ता : चिंता ही अहंकार की निशानी है, इसे ज़रा समझाइए।

दादाश्री : चिंता अहंकार की निशानी क्यों कहलाती है? क्योंकि उसके मन में ऐसा लगता है कि 'मैं ही इसे चला रहा हूँ'। इससे उसे चिंता होती है। 'इसका चलानेवाला मैं ही हूँ', इसलिए उसे 'इस लड़की का क्या होगा? इन बच्चों का क्या होगा? यह कार्य पूरा नहीं हुआ तो क्या होगा?' वह चिंता अपने सिर लेता है। खुद अपने आपको कर्ता मानता है कि 'मैं ही मालिक हूँ और मैं ही करता हूँ।' लेकिन वह खुद कर्ता है नहीं और व्यर्थ चिंताएँ मोल लेता है।

संसार में हो और चिंता में ही रहे और चिंता नहीं मिटे तो फिर उसे कितने ही जन्म लेने होंगे! क्योंकि चिंता से ही जन्म बँधते हैं।

यह छोटी सी बात आपको बता देता हूँ, यह बारीक बात आपको बता देता हूँ कि इस संसार में कोई मनुष्य ऐसा पैदा नहीं हुआ कि जिसे संडास जाने की स्वतंत्र शक्ति हो। तब फिर इन लोगों को इगोइज़म करने का क्या अर्थ है? यह दूसरी शक्ति काम कर रही है। अब, वह शक्ति अपनी नहीं है, वह पर-शक्ति है और स्व-शक्ति को जानता नहीं है, इसलिए खुद भी पर-शक्ति के आधीन है, और सिर्फ आधीन ही नहीं लेकिन पराधीन भी है। पूरा जन्म ही पराधीन है।

बेटी की शादी की चिंता

ऐसा है, कि यहाँ तो बेटी तीन साल की हो तभी से सोचने लगते हैं कि यह बड़ी हो गई, यह बड़ी हो गई। शादी तो बीसवें साल में होती है, लेकिन छोटी हो तब से चिंता करना शुरू कर देता है! बेटी की शादी की चिंता कब से शुरू करनी चाहिए, ऐसा किसी शास्त्र में लिखा है? और बीसवें साल में शादी करनी हो तो हमें चिंता कब से शुरू करनी चाहिए? दो-तीन साल की हो, तब से?

प्रश्नकर्ता : बेटी चौदह-पंद्रह साल की हो जाए, तब तो माँ-बाप सोचते हैं न!

दादाश्री : नहीं, तब भी फिर पाँच साल तो रहे न! उन पाँच सालों में चिंता करनेवाला मर जाएगा या जिसकी चिंता करता है, वह मर जाएगी, इसका क्या पता? पाँच साल बाकी रहे, उससे पहले चिंता कैसे कर सकते हैं?

फिर वह भी देखादेखी से कि फलाने भाई को तो देखो, बेटी की शादी करने की कितनी चिंता करते हैं और मुझे तो चिंता नहीं। फिर चिंता ही चिंता में तरबूजे जैसा हो जाता है! और बेटी की शादी करने का समय आए, तब हाथ में चार आने भी नहीं होते। चिंतावाला रुपये कहाँ से लाएगा?

आपको चिंता कब करनी है? कि जब आसपास के लोग कहें कि, 'बेटी का कुछ किया?' तब आप समझना कि अब सोचने का वक्त आ गया है और तब से उसके लिए प्रयत्न शुरू करना! यह तो आसपासवाले कुछ कहते नहीं और उस से पहले, पंद्रह साल पहले से चिंता करता है! फिर अपनी बीबी से भी कहेगा कि, 'तुझे याद है कि हमारी बेटी बड़ी हो रही है और उसकी शादी करनी है?' अब बीबी को क्यों चिंता करवाता है?

कुसमय की चिंता

सत्रह साल पहले बेटी ब्याहने की चिंता करता है, तो मरने की चिंता क्यों नहीं करता? तब कहेगा कि, 'नहीं, मरने की तो याद ही मत दिलाना।' तब मैंने पूछा कि, 'मरने का याद करने में क्या हर्ज है? आप नहीं मरनेवाले क्या?' तब कहा कि, 'यदि मरने की याद दिलाओगे न, तो आज का सुख चला जाता है और आज का हमारा सारा स्वाद बिगड़ जाता है।' 'तब फिर बेटी की शादी को क्यों याद करता है? तब भी तेरा स्वाद चला जाएगा न? और बेटी अपने ब्याह का सभी लेकर आई है। माँ-बाप तो इसमें निमित्त हैं।' बेटी अपनी शादी के सभी साधन लेकर आई होती है। बैंक बैलेन्स, पैसे, सभी लेकर आई है। कम या ज़्यादा जितना खर्च हो वह एक्ज़ेटली सब कुछ लेकर आई होती है।

बेटी की चिंता आपको नहीं करनी है। आप बेटी के पालक हो। बेटी अपने लिए लड़का भी लेकर आई होती है। हमें किसी से कहने नहीं जाना पड़ता कि लड़का पैदा करना। हमारी बेटी है, उसके लिए लड़का पैदा करना, ऐसा कहने जाना पड़ता है? अर्थात् सारा सामान तैयार लेकर आई होती है। तब बाप कहेगा, 'यह पच्चीस की हो गई, अभी तक उसका ठिकाना नहीं पड़ता। ऐसा है, वैसा है।' वह सारा दिन गाता रहता है। अरे, वहाँ पर लड़का सत्ताईस साल का हो चुका है, लेकिन तुझे मिलता नहीं है, तो शोर क्यों मचाता है? सो जा न चुपचाप। वह लड़की अपना टाइमिंग वगैरह सब सेट करके आई है।'

जो आपकी सत्ता में नहीं है, उसका चित्रण मत करो। पिछले जन्म की दो-तीन छोटी बेटियाँ थी, बेटे थे, उन सभी को इतने छोटे-छोटे छोड़कर आए थे, तो उन सब की कुछ चिंता करते हो? क्यों? और यों मरते समय तो बहुत चिंता होती है न, कि छोटी बेटी का क्या होगा? लेकिन यहाँ फिर नया जन्म लेता है, तब पिछले जन्म की कुछ चिंता ही नहीं न! खत-वत कुछ भी नहीं!! अर्थात् यह सारी परसत्ता है, उसमें हाथ ही नहीं डालना चाहिए। इसलिए जो कुछ होता है, वह 'व्यवस्थित में हो वह भले ही हो, और नहीं हो तो भले ही न हो।'

चिंता करने के बजाय धर्म की ओर मोड़ो

प्रश्नकर्ता : घर का जो प्रमुख व्यक्ति हो, उसे जो चिंता होती है, वह कैसे दूर करें?

दादाश्री : कृष्ण भगवान ने क्या कहा है कि 'जीव तू काहे सोच करे, कृष्ण को करना हो सो करे।' ऐसा पढ़ने में आया है? तो फिर चिंता करने की क्या ज़रूरत है?

बच्चों को लेकर क्लेश क्यों करते हो? धर्म के रास्ते पर मोड़ दो उन्हें, सुधर जाएँगे।

कुछ तो व्यवसाय को लेकर चिंता करते ही रहते हैं। वे किसलिए चिंता करते हैं? मन में ऐसा लगता है कि, 'मैं ही चलाता हूँ'। इसलिए चिंता होती है। 'वह चलानेवाला कौन है' ऐसा कोई साधारण भी किसी भी तरह का अवलंबन नहीं लेता। भले ही, तू ज्ञान से नहीं जानता हो, परंतु और किसी प्रकार का अवलंबन तो ले! क्योंकि तू नहीं चलाता है, ऐसा थोड़ा-बहुत तेरे अनुभव में आया तो है। चिंता तो सब से बड़ा इगोइज्जम है।

अधिक चिंतावाले कौन?

प्रश्नकर्ता : जिसे दो वक्त की रोटी भी न मिलती हो, उसे तो रोज़ की चिंता होती है न कि, 'कल क्या करेंगे? कल क्या खायेंगे?'

दादाश्री : नहीं, नहीं, वह ऐसा है न, सरप्लस की चिंता रहती है, खाने की चिंता किसीको भी नहीं रहती। सरप्लस की ही चिंता होती है। यह कुदरत ऐसी व्यवस्थित है कि सरप्लस की ही चिंता। बाकी, छोटे से छोटा पौधा चाहे कहीं भी उगा हो, वहाँ जाकर पानी छिड़क आती है। इतनी सारी तो व्यवस्था है। यह रेग्युलेटर ऑफ द वर्ल्ड है। वह वर्ल्ड को रेग्युलेशन में ही रखता है निरंतर। यह ऐसी कोई गप्प नहीं है, यानी कि सरप्लस की ही चिंता है। उसे खाने की चिंता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आपको सभी ऐसे सरप्लसवाले ही मिले लगते हैं कि जिन लोगों को चिंता होती ही है, डेफिशिट वाले कोई मिले नहीं लगते।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है, डेफिशिट वाले बहुत मिले हैं, लेकिन उन्हें चिंता नहीं होती। उन्हें मन में ज़रा ऐसा होता है कि आज इतना लाना है, वह ले आते हैं। अर्थात् जो चिंता-विंता करें वे ओर होंगे और ये तो भगवान को सौंप देते हैं। 'उसे अच्छा लगा वही ठीक' ऐसा करके चलने देते हैं। और ये तो भगवान नहीं, ये तो खुद कर्ता हैं न! कर्म का कर्ता मैं और भोक्ता भी मैं, इसलिए फिर चिंता सिर पर लेता है।

चिंता, वहाँ लक्ष्मी टिकेगी?

प्रश्नकर्ता : अगर ऐसा हो तब तो फिर लोग कमाने ही नहीं जाएँ और चिंता ही नहीं करें।

दादाश्री : नहीं, कमाने जाते हैं। वह भी उनके हाथ में नहीं है न! वे लट्टू हैं, कुदरत के घुमाए घूमते हैं और मुँह से अहंकार करते हैं कि मैं कमाने गया था। और बिना काम के चिंता करते हैं। चिंतावाला रुपया लाए कहाँ से? लक्ष्मीजी का स्वभाव कैसा है? लक्ष्मी चिंतावाले के यहाँ मुकाम नहीं करती। जो आनंदी हों, जो भगवान को याद करते हों, उनके यहाँ लक्ष्मीजी जाती हैं।

चिंता से धंधे की मौत

प्रश्नकर्ता : धंधे की चिंता होती है, बहुत अड़चनें आती है।

दादाश्री : चिंता होने लगे तो समझना कि कार्य अधिक बिगड़नेवाला है। चिंता नहीं हो तो समझना कि कार्य नहीं बिगड़ेगा। चिंता कार्य की अवरोधक है। चिंता से तो धंधे की मौत आती है। जो चढ़े-उतरे उसी का नाम धंधा, पूरण-गलन है वह। जिसका पूरण हुआ उसका गलन हुए बिना रहेगा ही नहीं। इस पूरण-गलन में आपकी कोई मिलिक्यत नहीं है। और जो आपकी मिलिक्यत है, उसमें कुछ पूरण-गलन होता नहीं!

ऐसा शुद्ध व्यवहार है! यह आपके घर में आपके बीवी-बच्चे सभी पाटनर्स हैं न?

प्रश्नकर्ता : सुख-दुःख के भोगवटे में हैं।

दादाश्री : आप अपने बीवी-बच्चों के अभिभावक कहलाते हो। सिर्फ अभिभावक को ही चिंता क्यों करनी चाहिए? और घरवाले तो उल्टा कहते हैं कि आप हमारी चिंता मत करना। चिंता से कुछ बढ़ जाता है क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं बढ़ता।

दादाश्री : नहीं बढ़ता? तो फिर वह गलत व्यापार कौन करे? यदि चिंता से बढ़ जाता हो तो करना।

उस समझ से चिंता गई...

धंधा करने में तो बहुत बड़ी छाती चाहिए। छाती बैठ जाए तो धंधा ठप्प हो जाए।

पहले एक बार हमारी कंपनी में घाटा हुआ था, ज्ञान होने से पहले। तब हमें सारी रात नींद नहीं आई, चिंता होती रही। तब भीतर से उत्तर मिला कि इस घाटे की चिंता अभी कौन-कौन कर रहा होगा? मुझे लगा कि मेरे साझेदार तो शायद चिंता नहीं भी करते होंगे। सिर्फ मैं अकेला ही चिंता कर रहा होऊँ। और बीवी-बच्चे सभी साझेदार हैं, तो वे तो कुछ जानते ही नहीं। अब वे सब नहीं जानते फिर भी उनका चलता है, तो मैं अकेला ही कम अक्ल हूँ कि चिंता करूँ ये सारी ही। तब फिर मुझे अक्ल आ गई। क्योंकि वे सभी चिंता नहीं करते, साझेदार हैं सब, तो क्या मैं अकेला ही चिंता करूँ?

सोचो मगर चिंता मत करो

चिंता यानी क्या, यह समझ लेना चाहिए कि यह मन का विचार

ऐसे उठ रहा है। हमें किसी भी बारे में, धंधे संबंधी, अन्य किसी भी संबंध में, या कोई बीमारी हो और, उसके लिए विचार आया, कुछ हद तक पहुँचने के बाद वह विचार हमें चक्कर में डाल दे और चक्कर में डाले तो समझना कि यह उलटे रास्ते चला है, यानी बिगड़ गया। वहाँ से फिर चिंता शुरू हो जाती है।

सोचने करने में हर्ज नहीं है। लेकिन सोच यानी क्या? एक विचार शुरू हुआ और एक हद से आगे गया, तो वह चिंता कहलाती है। हद के अंदर ही सोचना चाहिए। विचारों की नोर्मेलिटी कितनी? अंदर बवंडर नहीं उठे, तब तक। बवंडर उठने लगे तब बंद कर देना। बवंडर उठने के बाद चिंता शुरू हो जाती है। यह हमारी खोज है।

चिंता करने का अधिकार नहीं है। सोचने का अधिकार है, कि भाई यहाँ तक सोचना, और सोच जब चिंता में परिणामित हो तो बंद कर देना चाहिए। ये अबव नोर्मल विचार, चिंता कहलाते हैं। इसलिए हम सोचते करते हैं, परंतु यदि अबव नोर्मल हुआ और उलझे पेट में, तब बंद कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : आम तौर पर भीतर देखते रहे, तब तक विचार कहलाता हैं और भीतर चिंता होने लगी तो लपेट में आ गया, ऐसा कहलाता है।

दादाश्री : चिंता हुई यानी लपेट में ही आ गया न। चिंता हुई अर्थात् वह समझता है कि मेरे कारण ही चलता है, ऐसा मान बैठता है। इसलिए उन सब पचड़ों में पड़ने जैसा ही नहीं है और है भी ऐसा ही। यह तो सभी मनुष्यों में यह रोग घुस गया है। अब निकले कैसे जल्दी? जल्दी निकलेगा नहीं न! आदत हो गई है, वह जाएगी नहीं न! हेबीच्युएटेड।

प्रश्नकर्ता : आपके पास आए तो निकल जाता है न?

दादाश्री : हाँ, निकल जाता है, लेकिन धीरे धीरे निकलता है, लेकिन एकदम से नहीं जाती न फिर!

परसत्ता हाथ में ले, वहाँ पर चिंता

आपको कैसा है? कभी परेशानी होती है? चिंता हो जाती है?

प्रश्नकर्ता : यह हमारी बड़ी बेटी की सगाई तय नहीं होती, इसलिए परेशानी हो जाती है।

दादाश्री : आप के हाथ में हो तो परेशानी रहो न, लेकिन यह बात आपके हाथ में है? नहीं? तो फिर क्यों परेशान होते हैं? तब क्या इन सेठजी के हाथ में है? इस बहन के हाथ में है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : तब किसके हाथ में है, वह जाने बगैर आप परेशान रहें तो, वह किसके समान है कि ताँगा चल रहा है, उस पर हम दस आदमी बैठे हैं, बड़ी दो घोड़ोंवाली घोड़ागाड़ी हो, अब उसे चलानेवाला चला रहा है और अंदर आप शोर मचाओ कि, 'एय, ऐसे चला, एय, ऐसे चला' तो क्या होगा? जो चलाता है, उसे देखते रहो न! 'चलानेवाला कौन है' यह जानें तो हमें चिंता नहीं होगी। आप रात-दिन चिंता करते हो? कहाँ तक करोगे? उसका अंत कब आएगा, यह मुझे बताओ।

बेटी तो अपना लेकर आई है, क्या आप अपना लेकर नहीं आई थीं? ये सेठजी आपको मिले या नहीं मिले? यदि सेठजी आपको मिल गए, तो इस बेटी को क्यों नहीं मिलेगा? आप जरा धीरज तो रखो। वीतराग मार्ग में हो और ऐसी धीरज नहीं धरोगे तो उससे तो आर्तध्यान होगा, रौद्रध्यान होगा।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं, मगर स्वभाविक फ़िक्र तो होती है न!

दादाश्री : वह स्वाभाविक फ़िक्र, वही आर्तध्यान और रौद्रध्यान कहलाती है, भीतर आत्मा को पीड़ा पहुँचाई हमने। किसी और को पीड़ा नहीं पहुँचाता हो तो ठीक, मगर यह तो आत्मा को पीड़ा पहुँचाई।

चिंता से बँधें, अंतराय कर्म

चिंता करने से तो अंतराय कर्म डलता है और कार्य विलंबित होता है। आपको कहा हो कि फलाँ जगह लड़का है, तो आप प्रयत्न करो। चिंता करने को भगवान ने मना किया है। चिंता करने से तो अधिक अंतराय डलते हैं और वीतराग भगवान ने क्या कहा है कि, 'भाई, यदि आप चिंता करते हो तो आप ही मालिक हो? आप ही दुनिया चलाते हो? इसे यों देखा जाए तो मालूम होगा कि खुद को संडास जाने की भी स्वतंत्र शक्ति नहीं है। वह तो जब बंद हो जाए तब डॉक्टर बुलाना पड़ता है। तब तक वह शक्ति हमारी है, ऐसा हमें लगता है। लेकिन वह शक्ति अपनी नहीं है। वह शक्ति किसके अधीन है, ऐसी सब जानकारी नहीं रखनी चाहिए क्या?

इसका चलानेवाला कौन होगा? बहन, आप तो जानती होंगी? यह सेठजी जानते होंगे? कोई चलानेवाला होगा, या आप हो चलानेवाले?

चलानेवाले संयोग...

कर्ता कौन है? ये संयोग कर्ता हैं। ये सारे संयोग, साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स इकट्ठे होते हैं, तब कार्य हो ऐसा है। तो आपके हाथ में सत्ता नहीं है। आपको तो संयोगों को देखते रहना है कि संयोग कैसे हैं। संयोग इकट्ठे होते हैं तो कार्य हो ही जाता है। कोई मनुष्य मार्च महीने में बरसात की आशा रखे, वह गलत कहलाएगा है। और जून की पंद्रह तारीख आई कि संयोग इकट्ठे हुए। काल का संयोग इकट्ठा हुआ, परंतु बादलों का संयोग नहीं मिला हो, तो बिन बादल बरसात कैसे होगी? परंतु बादल जमा हुए, काल आ मिला, फिर बिजलियाँ कड़कीं, अन्य एविडेन्स इकट्ठे हुए, तो बरसात होगी ही। अर्थात् संयोग मिलने चाहिए। मनुष्य संयोगाधीन है, परंतु खुद ऐसा मानता है कि, 'मैं कुछ करता हूँ'। परंतु उसका कर्ता होना भी संयोगाधीन है। एक संयोग बिखर गया, तो उससे वह कार्य नहीं हो सकेगा।

‘मैं कौन हूँ’ यह जानने पर हमेशा के लिए हल

वास्तव में तो ‘मैं कौन हूँ’ यह जानना चाहिए न, खुद अपने ऊपर बिजनेस करेंगे, तो साथ आएगा। नाम पर बिजनेस करेंगे तो हमारे हाथ में कुछ नहीं रहेगा। थोड़ा-बहुत समझना पड़ेगा या नहीं? ‘मैं कौन हूँ’ यह जानना पड़ेगा न!

यहाँ आपको हल ला देते हैं, फिर चिंता-वरीज़ कुछ होंगी नहीं कभी। चिंता होती है, वह पसंद है? क्यों नहीं पसंद?

अनंत काल से भटक रहे हैं ये जीव, अनंत काल से। तब किसी समय कोई बार ऐसे प्रकाश स्वरूप ज्ञानीपुरुष मिल जाते हैं, तब छुटकारा दिलवा देते हैं।

टेन्शन अलग! चिंता अलग !

प्रश्नकर्ता : तो उस चिंता के साथ अहंकार किस तरह है?

दादाश्री : मैं नहीं होऊँ तो चलेगा नहीं, ऐसा उसे लगता है। ‘यह मैं ही कर रहा हूँ। मैं नहीं करूँ तो नहीं होगा, अब यह होगा? सुबह क्या होगा?’ ऐसा करके चिंता करता है।

प्रश्नकर्ता : चिंता किसे कहते हैं?

दादाश्री : किसी भी वस्तु को सर्वस्व मानकर उसका चिंतन करना, उसे चिंता कहते हैं। पत्नी बीमार हो गई हो, अब पैसे से भी ज्यादा अगर पत्नी ही सर्वस्व लगती हो, तो वहीं से उसे चिंता होने लगेगी। उसे सब से ज्यादा महत्व दिया, इसलिए चिंता घुस जाएगी और जिसके लिए सर्वस्व आत्मा ही है, उसे फिर काहे की चिंता होगी?

प्रश्नकर्ता : टेन्शन यानी क्या? चिंता तो समझ में आ गयी, अब टेन्शन की व्याख्या बताइए कि टेन्शन किसे कहें?

दादाश्री : टेन्शन उसीके जैसा भाग है। परंतु उसमें सर्वस्व नहीं

होता, सभी तरह के तनाव होते हैं। नौकरी का ठिकाना नहीं पड़ता, क्या होगा? एक ओर बीवी बीमार है, उसका क्या होगा? लड़का ठीक से स्कूल नहीं जाता, उसका क्या? इन सभी तनावों को टेन्शन कहते हैं। हमने तो सत्ताइस सालों से टेन्शन ही नहीं देखा है न!

अब सावधानी और चिंता में बहुत फ़र्क़। सावधानी तो जागृति है और चिंता यानी जी जलाते रहना।

नोर्मेलिटी से है मुक्ति

प्रश्नकर्ता : परवशता और चिंता दोनों एक नहीं हैं?

दादाश्री : चिंता तो अबव नोर्मल इगोइज़म है और परवशता वह इगोइज़म नहीं है। परवशता तो लाचारी है और चिंता वह अबव नोर्मल इगोइज़म है। अबव नोर्मल इगोइज़म हो तो चिंता होगी वर्ना नहीं होगी। यह रात को घर में नींद किसे नहीं आती होगी? तब कहें, जिसे इगोइज़म ज़्यादा है उसे।

इगोइज़म इस्तेमाल करने को कहा है, अबव नोर्मल इगोइज़म इस्तेमाल करने को नहीं कहा। अर्थात् चिंता करना गुनाह है और उसका परिणाम जानवर गति है।

प्रश्नकर्ता : चिंता नहीं हो, उसके लिए क्या उपाय है?

दादाश्री : वापस लौटना। वापस लौटना चाहिए या फिर इगोइज़म बिल्कुल खतम कर देना चाहिए। ज्ञानीपुरुष हों, ज्ञानीपुरुष 'ज्ञान' दें, तब सब हो जाता है।

चिंता किस तरह जाए?

प्रश्नकर्ता : चिंता क्यों नहीं छूटती? चिंता से मुक्त होने के लिए क्या करें?

दादाश्री : चिंता बंद हुई हो, ऐसा मनुष्य मिलेगा ही नहीं। कृष्ण

भगवान के भक्त को भी चिंता बंद नहीं हुई होती है न! और चिंता से सारा ज्ञान अंधा हो जाता है, फ्रेक्चर हो जाता है।

संसार में एक मनुष्य ऐसा नहीं होगा कि जिसे चिंता नहीं होती हो। साधु-साध्वी सभी को कभी न कभी तो चिंता होती ही है। साधु को इन्कमटेक्स नहीं होता, सेल्स टेक्स नहीं होता, न भाड़ा होता है, फिर भी कभी न कभी चिंता होती है। शिष्य के साथ झंझट हो तो भी चिंता हो जाती है। आत्मज्ञान के बगैर चिंता जाती नहीं।

एक घंटे में तो तेरी सारी चिंताएँ मैं ले लेता हूँ और गारन्टी देता हूँ कि यदि एक भी चिंता हो तो वकील करके अदालत में मुझ पर केस चलाना। ऐसे हमने हजारों लोगों को चिंता रहित कर दिया है। अरे माँग! माँगें वह दूँ ऐसा है, लेकिन ज़रा ठीक से माँग, ऐसा माँगना कि जो तेरे पास से कभी जाए नहीं। ये नाशवंत चीज़ें मत माँगना। शाश्वत सुख माँग लेना।

हमारी आज्ञा में रहे और एक चिंता हो तो फिर दावा दायर करने की छूट दी है। हमारी आज्ञा में रहना। यहाँ पर सब कुछ मिले, ऐसा है। इन सभी से शर्त क्या रखी है, जानते हो तुम? एक चिंता हो तो मुझ पर दो लाख का दावा दायर करना।

प्रश्नकर्ता : आपके पास से ज्ञान पाया, मन-वचन-काया आपको अर्पण किए, फिर चिंता होती ही नहीं।

दादाश्री : होगी ही नहीं।

चिंता गई, उसका नाम समाधि। उससे फिर पहले से काम भी ज्यादा होगा, क्योंकि उलझन नहीं रही न फिर! ऑफिस जाकर बैठे कि काम होता रहता है। घर के विचार नहीं आते, बाहर के विचार नहीं आते, और किसी प्रकार के विचार ही नहीं आते और संपूर्ण एकाग्रता रहे।

वर्तमान में बरते वह सही

लोगों को तीन साल की इकलौती बेटी हो तो, मन में ऐसा होता

है कि यह बड़ी होगी तो इसकी शादी करनी होगी, उसमें खर्च होगा। ऐसी चिंता करने को मना किया है। क्योंकि जब उसका टाइमिंग मिलेगा, तब सारे ऐविडन्स (संयोग) इकट्ठे हो जाएँगे। इसलिए टाइमिंग आने तक आप उसमें हाथ मत डालना। आप अपने तरीके से बेटी को खिलाओ-पीलाओ, पढ़ाओ, लिखाओ लेकिन आगे की सारी चिंता मत करो, आज के दिन की, वर्तमान की ही! भूतकाल तो बीत गया। जो आपका भूतकाल है, उसे क्यों उखाड़ते हो? नहीं उखाड़ते न! भूतकाल बीत गया, उसे तो कोई मूर्ख मनुष्य भी नहीं उखाड़ता। भविष्य व्यवस्थित के हाथों में है, फिर हमें वर्तमान में ही रहना चाहिए। अभी चाय पीते हो तो आराम से चाय पी रहे, क्योंकि भविष्य व्यवस्थित के हाथों में है। हमें क्या झंझट? इसलिए वर्तमान में ही रहना। जब खाना खाओ, उस घड़ी खाने में पूर्ण चित्त रखकर खाना चाहिए। पकोड़े किसके बने हैं, यह सब आराम से जानना। 'वर्तमान में रहना', इसका अर्थ क्या कि बहीखाता लिखो तो बिल्कुल एक्युरेट, उसी में ही चित्त रखना चाहिए। क्योंकि यदि चित्त भविष्यकाल में जाएगा है तो उससे आज का बहीखाता बिगड़ जाएगा है। क्योंकि भविष्य के विचार किच-किच करते हैं, जिससे आज का बहीखाता बिगड़ जाता है। भूल-चूक हो जाती है। लेकिन जो वर्तमान में रहता है, उसकी एक भी भूल नहीं होती, उसे चिंता नहीं होती।

चिंता, नहीं है डिस्चार्ज

प्रश्नकर्ता : क्या चिंता डिस्चार्ज है?

दादाश्री : चिंता डिस्चार्ज में नहीं आती, क्योंकि उसमें 'करनेवाला' होता है।

जो चिंता चार्ज रूप में थी, वह अब डिस्चार्ज रूप में होती है, उसे हम सफोकेशन कहते हैं। क्योंकि भीतर छूने नहीं देते न! आत्मा अहंकार से अलग बर्तता है न! जब एकाकार होते थे, तब वह चिंता थी।

अब जो सफोकेशन है, वह चार्ज हुई चिंता है। उसके डिस्चार्ज होते

वक्त तो सफोकेशन होता है। जैसे चार्ज क्रोध हुआ था और आत्मा अलग हो जाने से डिस्चार्ज होते समय वह गुस्सा बन गया। उसी प्रकार, जिसमें आत्मा जुदापन से बर्ते वह सब जुदा ही है।

अर्थात् यह ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात चिंता होती ही नहीं, वह सफोकेशन है खाली! चिंतावाला चेहरा पता चल जाता है। यह जो होता है, वह तो सफोकेशन, घुटन होती है।

आपको रास्ता चित्रित करके दिया हो, और उसे समझने में आपसे गलती हो गई, तो फिर आपको उलझन होगी, उसे चिंता नहीं कहते, वह घुटन कहलाती है। अर्थात् चिंताएँ नहीं होगी। चिंताओं में तो तड़-तड़ करके खून जलता रहता है!

‘व्यवस्थित’ का ज्ञान, वहाँ चिंता गायब

प्रश्नकर्ता : ‘व्यवस्थित’ यदि ठीक से समझ में आ जाए, तो चिंता या टेन्शन कुछ भी नहीं रहेगा?

दादाश्री : ज़रा भी नहीं रहता। ‘व्यवस्थित’ यानी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। ‘व्यवस्थित’ तब तक समझते जाना है कि अंतिम ‘व्यवस्थित,’ ‘केवळज्ञान’ उत्पन्न करे और व्यवस्थित समझ में आ जाए तो केवळज्ञान समझ में आ जाएगा। यह ‘व्यवस्थित’ की मेरी खोज इतनी सुंदर है! यह गज़ब की खोज है!!

अनंत जन्मों से संसार कौन खड़ा कर रहा था? कर्ता बन बैठे थे, उसकी चिंता!

प्रश्नकर्ता : इस ‘ज्ञान’ से अब मुझे भविष्य की चिंता नहीं रहती है।

दादाश्री : आप तो ‘यह व्यवस्थित है’ ऐसा कह देते हो न! व्यवस्थित आपकी समझ में आ गया है न! कोई परिवर्तन होनेवाला नहीं

हैं। सारी रात जागकर दो साल बाद के सोचोगे न, तो भी वे यूज़लेस विचार हैं, वेस्ट ऑफ टाइम एन्ड एनर्जी हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने जो 'रियल' और 'रिलेटिव' समझाया, उसके बाद चिंता गई।

दादाश्री : बाद में तो चिंता ही नहीं होती न! इस ज्ञान के पश्चात् चिंता हो, ऐसा है नहीं। यह मार्ग संपूर्ण वीतराग मार्ग है। संपूर्ण वीतराग मार्ग यानी क्या, कि चिंता ही नहीं हो। यह तमाम आत्मज्ञानियों का, चौबीस तीर्थकरों का मार्ग है, यह और किसीका मार्ग नहीं है।

- जय सच्चिदानंद